वीतराग शासन जयवंत हो

श्री विघ्नहर्ता चिंतामणि पार्श्वनाथ विधान

रचयिता
आचार्य श्रीविशद सागर जी महाराज

कृति : श्री विघ्नहर्ता चिंतामणि पार्श्वनाथ विधान
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : द्वितीय-2023 प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085
ब्र. आस्था दीदी 9660996425
ब्र. सपना दीदी 9829127533
ब्र. आरती दीदी, 8700876822
ब्र. प्रदीप, 7568840873
प्राप्ति स्थल: 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, 09416888879
3. महेन्द्र जैन रोहिणी से.-3, दिल्ली
4. हरीश जैन दिल्ली, 9136248971
www.vishadsagar.com.app-vishadsagarji
मूल्य : 40/- रु. मात्र

:: पुण्यार्जक ::
श्रीमान कैलाश चन्द जी जैन, श्रीमती संतोष जी जैन
पुत्र-पुत्रवधु
श्री संदीप जी जैन, श्रीमती सलोनी जैन
श्री भारतेन्दु जी जैन श्रीमती ज्योति जैन, अनुष्का जैन
वंशिका जैन, अविका जैन
पुत्र
सन्मति जैन

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली
मो. 9811374961, 9811363613
pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

विशद भावना

भारत देश उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अमेठिया सलेमपुर। काकोरी स्थित श्री पार्श्व धाम का शिलान्यास एवं कार्य प्रारम्भ मुनि श्री पार्श्व सागर के सान्निध्य में हुआ। पंचकल्याणक सन् 2015 में आचार्य श्री दयासागर जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जिसकी प्रभावना अल्प समय में ही इतनी बढ़ी कि लोगों की मनोकामनाएँ पूरी होने से अतिशयकारी जिनालय घोषित हो गया क्षेत्र पर सन् 2021 में पंच मानस्तम्भ का पंचकल्याणक आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी ससंघ के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

अवध प्रान्त में शाश्वत तीर्थ अयोध्या है जहाँ श्री आदिनाथ भगवान का जन्म हुआ इस भावना से इस तीर्थ पर एक विशाल जिनबिम्ब श्री आदिनाथ भगवान का स्थापित किया गया।

लखनऊ वर्षायोग 2023 में मोक्ष सप्तमी पर श्री पार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर श्री सम्मेद शिखर की कृत्रिम रचना बनाकर उस पर लखनऊ एवं अवध प्रान्त की समाज के द्वारा सामूहिक निर्वाण लाडू चढ़ाया गया इस अवसर पर समाज को, प्रेरणा दी कि क्यों ना यहाँ पर स्थाई सम्मेद शिखर का निर्माण हो कमेटी ने अपनी सहज स्वीकृति प्रदान की आगामी समय में स्वर्ण भद्रकूट पार्श्वनाथ टोंक की रचना पर स्थापित होने वाली पार्श्वनाथ की प्रतिमा का एवं विशाल जिनबिम्ब श्री आदिनाथ जी की प्रतिमा का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समारोह **श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी** एवं **आचार्य श्री 'विशद' सागर जी ससंघ सान्निध्य** में हो ऐसी भावना कमेटी ने रखी। इस अवसर पर मुनि विशाल सागर जी के आग्रह पर काकोरी के श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जी की पूजा आरती चालीसा विधान आदि की रचना की जिसका प्रकाशन कराने का भाव श्री कैलाश चन्द जैन भारती पुत्र श्री सन्दीप जैन परिवार काकोरी वालों ने बनाया एवं श्री प्रमोद जैन पारस प्रकाशन दिल्ली जिनकी प्रेस में यह विधान छपाया ये सभी आशीर्वाद के पात्र हैं श्री पार्श्वनाथ भगवान की भक्ति का अपूर्व सोपान श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ विधान करके लोग धर्मलाभ प्राप्त कर अपना जीवन सफल कर स्वर्गापवर्ग के भागी बनें यही विशद कामना है।

आचार्य विशद सागर जी
पावन वर्षायोग 2023, चारबाग-लखनऊ

पूर्व भव

प्रथम भव-अरविन्द नामक राजा का मरुभूति नामक मन्त्री, **दूसरा भव**-वन में विशाल वज्रघोष नामक हाथी, **तीसरा भव**-सहस्त्रसार स्वर्ग में देव, **चौथा भव**-अग्निवेग नामक विद्याधर, **पांचवां भव**-सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ, **छटा भव**-वज्रनामि चक्रवर्ती, **सातवां भव**-मध्यम ग्रवैयक में अहमिन्द्र हुआ, **आठवों भव**-अयोध्या नगरी में आनन्द नामक राजा हुआ, **नवा भव**-आनत स्वर्ग में देव हुआ।

दसवा भवः-बनारस देश में काश्यप गोत्री राजा विश्वसेन राज्य करते थे उनकी रानी का नाम वामा (ब्राह्मी) था देवों ने रत्नवृष्टि करके रानी की पूजा की। रानी ब्राह्मी ने वैशाख कृष्ण द्वितीय के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में सोलह शुभ स्वप्न देखे। मुख में प्रवेश करता हुआ हाथी देखा। प्रातःकाल रानी उठकर नित्यकर्म से निवृत होकर राजा को स्वप्न सुनाये। उनसे स्वप्न फल सुनकर अति प्रसन्न हो रही थी। तभी देवों ने आकर भगवान के प्रथम गर्भ कल्याणक की पूजा की और वापस चले गये। नौ माह पश्चात् पौष कृष्ण एकादशी के दिन अनिल योग में पुत्र को जन्म दिया। इन्द्र का आसन कम्पायमान हुआ उसने अवधिज्ञान से जान लिया कि भगवान का जन्म हुआ सभी ने नमस्कार किया और आकर बालक को सुमेरु पर्वत पर लेजाकर क्षीर सागर के जल से अभिषेक किया और वस्त्रालङ्कार पहनाये व जन्मोत्सव मनाया जन्म कल्याणक की पूजा करके भगवान का नाम 'पार्श्वनाथ' रखकर बालक को माता-पिता का देकर वापस चले गये। पूर्व नेमिनाथ भगवान के मोक्ष गमन के 83750 वर्ष बाद भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ। इनकी आयु 100 सौ वर्ष की थी, शरीर की कान्ति धान के छोटे पौधे समान हरे रङ्ग की थी, शरीर की ऊंचाई 9 हाथ की थी, उग्रवंश में उत्पन्न हुए थे। जब 16 वर्ष के हुए तब वन में गये वहाँ एक तपस्वी अग्नि तपकर रहा था। वह कमठ का जीव महिपाल था जो कि इनकी माता का पिता था यानि पार्श्वनाथ भगवान का नाना था। जैसे ही तपस्वी अग्नि तपकर ने आग में डालने को लकड़ी उठाई तो भगवान ने मना किया कि इसको मत काटो इसमें नाग युगल है लेकिन तपस्वी नहीं

माना उसने लकड़ी काट दी उनके दो टुकड़े हो गये। भगवान पार्श्वनाथ ने नागयुगल को तड़पते देखकर णमोकार मन्त्र सुनाया और उपदेश दिया। उन जीवों ने समता पूर्वक उपदेश सुनकर प्राण त्याग दिये और मरकर नाग कुमार जाति के देव धरणेन्द्र और पद्मावती हुए। उसी समय पार्श्वनाथ भगवान को वैराग्य हो गया। एक बार अयोध्या के राजा जयसेन का दूत भेंट लेकर आया वह दिन भगवान का जन्म दिन पौष कृष्णा दशमी का दिन था। दूत अयोध्या में अवतरित तीर्थंकरों के विषय में चर्चा करने लगा। दूत के मुख से तीर्थंकरों का वर्णन सुनकर भगवान को वैराग्य हो गया, दरबार छोड़ संयम धारण कर लिया और लौकान्तिक देवों ने आकर भगवान के वैराग्य की सराहना और भगवान देवों द्वारा लाई "विमला" नामक पालकी में आरुढ़ होकर अश्व वन में गये। पौषकृष्ण एकादशी के दिन प्रातःकाल 300 राजाओं के साथ तेला का नियम लेकर दीक्षा रूपी लक्ष्मी स्वीकृत कर ली। दीक्षा लेते ही मनःपर्यय ज्ञान हो गया। तीसरे दिन भगवान गुल्मखेट नगर गये वहाँ धन्य नामक राजा ने पड़गाहन कर शुद्ध आहार दिया और पञ्चाश्चर्य प्राप्त किया। भगवान ने 30 वर्ष की आयु में दीक्षा ली। मुनि अवस्था में चार माह बीतने पर जिस वन में दीक्षा ली थी उसी वन में देवदारू वृक्ष के नीचे विराजमान हो गये। उसी समय कमठ का जीव जो शम्बर नामक असुर था आकाश मार्ग से जा रहा था विमान रुकने पर उसने विभङ्गावधि ज्ञान से कारण जाना तो उसे पूर्वभव का बैर-बन्धन दिखने लगा। उसने क्रोधवश महा गर्जना व महावृष्टि करना शुरु कर दिया। अतिशय दुष्ट सात दिन तक लगातार भिन्न-भिन्न प्रकार से उपसर्ग करता रहा बड़े-बड़े पहाड़ तोड़कर पत्थर बरसाये। धरणेन्द्र पद्मावती के साथ बाहर आया। पद्मावती ने भगवान को चारों तरफ से घेर लिया और अपने फन पर उठा लिया। धरणेन्द्र ने वज्रमय छत्र तानकर खड़ा हो गया। चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में केवलज्ञान हो गया देवों ने आकर भगवान का चौथा कल्याण केवलज्ञान की पूजा की भी समवशरण की रचना की। उसी समय कमठ के जीव के भी जो शम्बर नामक देव था परिणाम बदल गये शान्त हो गया और आकर भगवान पार्श्वनाथ के चरणों में नमस्कार करने लगा। भगवान पार्श्वनाथ को जन्म से ही मति,

श्रुति, अवधि तीन ज्ञान और क्षायिक सम्यग्दर्शन था आठ वर्ष की अवस्था में ही अणुव्रत का पालन करने लगे थे। उनको समस्त विधाएँ स्वयं ही आ गई थी। भगवान के संघ में स्वयंभू आदि 10 गणधर थे, 350 पूर्वधर, 10900 शिक्षक, 1400 अवधिज्ञानी, 1000 केवली, 1000 विक्रियाधारी, 750 मन:पर्ययज्ञानी, 600 वादी। कुल मिलाकर 16000 हजार मुनिराज संघ में थे। सुलोचना मु.आ. 36000 हजार आर्यिकाएँ 100000 लाख श्रावक, 300000 लाख श्राविकाएँ असंख्यात देवी-देवता, तिर्यञ्च संघ में रहते थे। भगवान ने 70 वर्ष 5 माह तक विहार किया। अन्त में आयु का एक माह शेष रहने पर सम्मेदशिखर जाकर 36 मुनियों के साथ प्रतिमा योग धारण कर लिया। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रात: काल के समय विशाखा नक्षत्र में स्वर्णभद्र कूट से मोक्ष प्राप्त हो गया। देवों ने आकर भगवान के पांचवें कल्याण मोक्ष कल्याणक की पूजा की। भगवान पार्श्वनाथ को मेरा नमस्कार हो। भगवान पार्श्वनाथ जन्म-मरण के दु:खों से हमारी रक्षा करें।

हस्त प्रच्छालन मंत्र

ॐ ह्रीं असुर सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि।

जल शुद्धि मंत्र

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं स: स्वाहा। (सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्र: असि आ उ सा इदं सर्व नदी कूप जलं अमलं भवतु (अंजुली में जल लेकर निम्न मंत्र बोले एवं अमृतस्नान करें)
2. ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठ: ठ: ह्रीं स्वाहा।

अभिषेक पाठ

तर्ज-आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनबिम्ब परम है सेतू।
जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते॥
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे।
हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए॥1॥

(श्वासोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प।
भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प॥2॥

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तिलक लगाने का मंत्र

चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंगे।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग॥3॥

ॐ ह्रीं नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

मण्डपशुद्धि मंत्र

क्षीरसिन्धु के नीर से, इन्द्र किए प्रच्छाल।
शुद्ध करें वह पीठ हम, छोड़ के अन्तर्जाल॥

ॐ ह्रीं अर्हं जलेन पीठ प्रच्छालनं करोमि।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्त जिन, तीर्थंकर भगवान।
पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि।

सिंहासन स्थापना

पाण्डुक शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष।
न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

(तर्ज-जिन प्रतिमा लेने चलो............)

लेने चलें भाई लेने चलें, जिन प्रतिमा जी को लेने चलें।
करके न्हवन आवश्यक पलें, जिनप्रतिमा जी को लेने चलें॥टेक॥
प्रथम करें अभिषेक पुनःकर जिनवर की पूजन अर्चन।
नव कोटी से जिन चरणों में, करना भाव सहित वन्दन॥
जिन अर्चा करके भवि जीवों, के सारे ही पाप गलें।
जिन प्रतिमा...॥1॥

कृत्रिमा-कृत्रिम चैत्य जिनालय, जग में गाए महति महान।
काल अनादी से करते हैं, भव्य जीव जिनका गुणगान॥
भक्ती करके ज्ञान के दीपक, भवि जीवों के हृदय जलें।
जिन प्रतिमा...॥2॥

हम सबने सौभाग्य जगाए, पाए श्री जिन के दर्शन।
न्हवन करें जल ले कलशों में, करें चरण का भी स्पर्शन॥
जिन पूजा करके जीवन में, आने वाले विघ्न टलें।
जिन प्रतिमा...॥3॥

जिनबिम्ब स्थापना

भक्तिभाव के रत्न जड़ित, पावन सिंहासन।
हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन॥
आह्वानन है यहाँ आपका, सिंहासन पर।
नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निहपाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

चार कलश स्थापना

प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चउ कोंण में, करते मंगलकार॥7॥

ॐ ह्रीं चतुःकोणेषु स्वस्तये चतुः कलशस्थापनं करोमि।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ॥8॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूलनायक का अभिषेक पाठ

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्पार।
भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ें प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अन्य जिनबिम्बाभिषेक

न्हवन सर्व जिन प्रतिमाओं का, करते होके भाव विभोर।
विशद भावना भाते हैं प्रभु, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
जिनाभिषेक करके विशद, झुका रहे पद माथ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो अभिषेकं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भजन-अभिषेक समय का

(तर्ज-करने जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी॥

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।टेक।।
श्री जिन बिम्ब प्रतिष्ठ करके, जिनका न्हवन कराते।
विशद भाव से जिन चरणों, में सादर शीश झुकाते।।
चलो चले भाई हम सब, शव डगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।1।।
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए।।
खुशियाँ छाईं चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।2।।
प्रासुक करके जल भर करके, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे।।
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।।3।।

अभिषेक समय की वन्दना

(तर्ज-जिनवर जगती के ईश...)

हे तीन लोक के नाथ!, झुकाते माथ।
आज हम स्वामी, अभिषेक करें शिवगामी।।टेक।।
अकृत्रिम सोहें जिन मंदिर, जिन प्रतिमाएँ जिनमें सुंदर।
भक्ती करके शत इन्द्र करें प्रणमामी, अभिषेक करें शिवगामी।।
हे तीन लोक.....।।1।।

जल क्षीर सिंधु से लाते हैं, जिनवर का न्हवन कराते हैं।
भक्ती कर बनते भक्त, श्रेष्ठ पथगामी, अभिषेक करें शिवगामी।।
हे तीन लोक.....।।2।।

सुर इन्द्रों का सहयोग करें, इन्द्राणी मंगल पात्र भरें।
सुर चँवर ढौरते, जिनके आगे नामी, अभिषेक करें शिवगामी।।
हे तीन लोक.....।।3।।

जो न्हवन प्रभु का करते हैं, वे कर्म कालिमा हरते हैं।
वे सद्श्रावक भी बने 'विशद' शिवगामी, अभिषेक करें शिवगामी।।
हे तीन लोक.....।।4।।
जो जिनवर का अभिषेक करें, वे अपने संकट दूर करें।
सद्संयम धर, बन जाते अन्तर्यामी, अभिषेक करें शिवगामी।।
हे तीन लोक.....।।5।।

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

वीतराग जगन्नेत्रं, सर्वज्ञं सर्व दर्शिकम्।
'विशद' शांति प्रदायं, शांतिधारा करोम्यहं।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्न-विनाशनाय सर्वरोगोपसर्ग विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (....) **सर्वज्ञानावरणकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदर्शनावरणकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववेदनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनामकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रोधं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमायां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वलोभं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वरागं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाश्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगौभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्द्धि

छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वजलोदर भगंदर कुष्ठकामलादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववायुयान-दुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पयान दुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचतुश्चक्रिका दुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूतपिशाचव्यंतर-डाकिनी-शाकिन्यादि भयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःख** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखरशिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता-अभयदान-दायकसर्वाभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहतिमहावीरसन्मति-वीरातिवीरवर्धमाननामालंकृत श्रीमहावीर जिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु सुखिनोभवंतु सुखिनोभवंतु।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरार्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे...... प्रदेशे....... नामनगरे वीरसंवत्....... मासोत्तमे........ मासे........ पक्षे......... तिथौ....... वासरे नित्य पूजावसरे (..........विधानावसर) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्य राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनि आर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य मम च.... शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! **सुभिक्षं** कुरु कुरु **मनः समाधिं** कुरु कुरु **धर्म शुक्लध्यानं** कुरु कुरु **सुयशः** कुरु कुरु **सौभाग्यं** कुरु कुरु **अभिमतं** कुरु कुरु **पुण्यं** कुरु कुरु **विद्यां** कुरु कुरु **आरोग्यं** कुरु कुरु **श्रेयः** कुरु कुरु **सौहार्दं** कुरु कुरु **सर्वारिष्ट ग्रहादीन्** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय आयुर् द्राघय द्राघय। सौख्यं साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांति कुरु कुरु ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ्य मम च.... सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शसनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भाविताना।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांती धारा देते हैं।।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद' भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर! करुणा कर।
हे तेज पुञ्ज! हे तपोमूर्ति!, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर॥
विमल सिंधु के विमल चरण से, करुणा के झरने झरते।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते॥

ॐ हूँ सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज-सुरपति ले अपने........)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा......॥टेक॥
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है, जग सारा-जिन शीश...॥1॥
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों मे भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें, जयकारा-जिन शीश...॥2॥
गिरि तरुवर पर जिनगृहे मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
अकृत्रिम ना निर्मित किसी, के द्वारा-जिन शीश...॥3॥
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है, संसार असारा-जिन शीश...॥4॥
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए, छुटकारा-जिन शीश...॥5॥
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट, निवारा-जिन शीश...॥6॥
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे शुभम् शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके, 'विशद' सितारा-जिन शीश...॥7॥
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा-जिन शीश...॥8॥

लघु विनय पाठ

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अत: भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥ इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत ॥

1-अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमोअरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनम:। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए॥
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनी, बाधा ना रह पाए॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥2॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥3॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥5॥

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण॥

तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान॥1॥
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!॥
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन॥2॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश॥
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय॥

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान॥
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण॥1॥
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥ (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना (दोहा)

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान विंशति जिनः अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठि सर्व निर्वाणक्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

चाल छन्द

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भव ताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- **पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।**
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

दोहा- **दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।**
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्यं यथेष्ठ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष॥4॥

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते॥
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते॥
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते॥
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु विद्यमान विंशति जिन अनन्तानंत सिद्ध सर्व निर्वाणक्षेत्र समूह जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वाद: (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ॥

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध॥
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री.....सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्र गणधरादि मुनि समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ति पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री... सहित सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

जयमाला

दोहा- जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल॥

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन॥1॥
भरैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष॥2॥
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भाव व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान॥3॥
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार॥4॥
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान॥5॥
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश॥6॥

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री.....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक नन्दीश्वर, पंचमेरु, सम्बन्धित, कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ॥

श्री आदिनाथ पूजन

स्थापना

जो कर्म भूमि के समय श्रेष्ठ, षट्कर्मों का उपदेश किए।
तुम ऋषी बनो या कृषी करो, जीवों को यह संदेश दिए॥

ऐसे श्री ऋषभ देव स्वामी, जो धर्म प्रवर्तक कहलाए।
हम आदिनाथ का आह्वानन, करने को चरणों में आए।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार।**
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा- **पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पावन फूल।**
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

आषाढ़ वदि द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जनकल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी फाल्गुन एकादशी जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनवदि एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदि चौदश हुई महान, कैलाशगिरि से पाए निर्वाण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।5।।

ॐ ह्रीं माघवदि चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल॥

(चौबोला छन्द)

आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, धर्म प्रवर्तन किए महान।
निज स्वभाव में लीन हुए प्रभु, पाए शाश्वत मुक्ती धाम॥
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महति महान।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण॥1॥
पाण्डु शिला पे हर्ष भाव से, इन्द्र किए प्रभु का अभिषेक।
नाम दिया सौधर्म इन्द्र ने, प्रभु के पग में लक्षण देख॥
षट् कर्मों का राज्य अवस्था, में ही दिए आप संदेश।
नृत्य देखकर नीलाञ्जना का, संयम धारे प्रभु विशेष॥2॥
सिद्धारथ वन में जा प्रभु ने, निज आतम का किया मनन।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्ल ध्यान में हुए मगन॥
कर्म घातियाँ नाश प्रभु ने, पाया पावन केवलज्ञान।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर ने, समवशरण कीन्हा निर्माण॥3॥
गंध कुटी में कमलाशन पर, अधर विराजे जिन तीर्थेश।
ॐकारमय दिव्य देशना, द्वारा दिए भव्य संदेश॥
अष्टापद पर जाके प्रभु जी, किए कर्म का पूर्ण विनाश।
मोक्ष महापद को पाकर के, सिद्धशिला पर कीन्हे वास॥4॥
किए प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, नगर नगर में आभावान।
विशद भाव से जिनके चरणों, करते हैं हम भी गुणगान॥
नाथ आपकी अर्चा करके, मेरे मन जागा आनन्द।
पुण्योदय जागा है मेरा, हुआ पाप आश्रव भी मंद॥5॥

(घत्ता छंद)

हे आदीश्वर! प्रथम जिनेश्वर, भव संताप विनाश करो।
हम तुमको ध्याते पूज रचाते, मेरे उर में वास करो॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक में पूज्य है, आदिनाथ दरबार।
जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष महल का द्वार॥

॥ इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत ॥

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना

दोहा- शनि ग्रह पीड़ा हर कहे, मुनिसुव्रत भगवान।
जिनका करते आज हम, भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

निर्मल नीर भराकर लाए, जन्मादिक रुज मम नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर से शुभ गंध बनाए, भवाताप हरने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे मनहारी, अक्षय पद दायक शुभकारी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदाई।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के हम शुभ दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में हम धूप जलाएँ, आठों कर्म नाश हो जायें।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह सरस चढ़ाते भाई, जो हैं मोक्ष महाफलदायी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **शांतीधारा दे रहे, पाने शिव सोपान।**
यही भावना है विशद, पायें पद निर्वाण॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- **मुक्ती के राही बने, रत्नत्रय को धार।**
पुष्पांजलि करते चरण, जिनपद बारंबार॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥4॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि द्वादशि शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिवपद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।**
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल॥

(नरेन्द्र छंद)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए॥1॥
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिह्न बताया।
बीस हजार वर्ष का आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्कापात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥
गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर, निर्जर कूट बताई।
उस पावन भूमी से प्रभु ने, मोक्ष लक्ष्मी पाई॥7॥

दोहा- **अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।**
कूट निर्जरा से प्रभु, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **मुनिसुव्रत भगवान का, जपें निरन्तर नाम।**
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावें वे शिवधाम॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ॥

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर तब, समवशरण बनवाते हैं॥
नेमिनाथ तीर्थंकर जिनकी, अर्चा करते महति महान।
विशद हृदय में श्री जिनेन्द्र का, भाव सहित करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

प्रभु निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर ये धवल चढ़ाएँ, भव ताप पूर्ण विनशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

ये पुष्प चढ़ाने लाए, मम काम रोग नश जाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य सरस सुखदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

यह धूप जलाते भाई, जो है पावन शिवदायी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, शाश्वत शिव-पदवी पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चाल छन्द

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥1॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥2॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तपमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥4॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥5॥
ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल॥
(तोटक छन्द)
जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन॥1॥
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान॥2॥
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान॥3॥
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़॥4॥
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान॥5॥
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास॥6॥
दोहा- भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा- गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत॥
॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ॥

मानस्तंभ की पूजन

स्थापना

मानस्तंभ का दर्शन करके, प्राणी का गल जाए मान।
देव, शास्त्र, गुरु के प्रति उनके, हृदय में जागे सद्श्रद्धान॥
चारों दिश जिन-बिम्ब शोभते, वीतराग मुद्रा पावन।
जिन बिम्बों का विशद भाव से, करते हैं हम आह्वानन्॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
(अर्धशम्भू-छन्द)
कूप से नीर यह लाए, उसे प्रासुक कराते हैं।
जरादिक रोग नश जाए, भावना श्रेष्ठ भाते हैं॥1॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।
मलयगिर का लिया चंदन, नीर में जो घिसाते हैं।
भवाताप पूर्ण नश जाए, चरण में सिर झुकाते हैं॥2॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
धवल अक्षत यहाँ लाए, नीर से जो धुवाते हैं।
सुपद अक्षय मिले हमको, भाव से भक्ति गाते हैं॥3॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
झड़े जो पुष्प वृक्षों से, थाल में वे भराते हैं।
कामरज नाश हो जाए, प्रभु भक्ती रचाते हैं॥4॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
सुचरु ताजे बनाए हैं, थाल में जो सजाते हैं।
क्षुधारुज नाश करने को, प्रभु चरणों चढ़ाते हैं॥5॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप घृत का बनाया है, यहाँ पर जो जलाते हैं।
महातम मोह का नाशी, ज्ञान निज में जगाते हैं॥6॥
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुरभित बनाई यह, अग्नि में जो जलाते हैं।
कर्म आठों नशें मेरे, शीश चरणों झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस ताजे लिए फल यह, चरण में जो चढ़ाते हैं।
महाफल मोक्ष हम पाएँ, भावना श्रेष्ठ भाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अर्घ्य यह पावन, विशद चरणों चढ़ाते हैं।
मिले शाश्वत सुपद हमको, परम जो सिद्ध पाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।**
विशद भावना है यही, पाएँ भव से पार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- **पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।**
भाते हैं ये भावना, शिवपथ हो अनुकूल॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अर्घ्यावली

(चाल छन्द)

प्रभु वीतरागता पाए, जिन प्रतिमा यह दर्शाए।
हम पूरव दिश की भाई, शुभ पूज रहे अतिशायी॥1॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ पूर्व दिक जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मानस्तंभ निराले, मिथ्यातम हरने वाले।
जिसकी हम जिन प्रतिमाएँ, दक्षिण की पूज रचाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ दक्षिणदिक जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मानस्तंभ कहाए, मानी का मान गलाए।
जिसकी हम जिन प्रतिमाएँ, पश्चिम की पूज रचाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ पश्चिमदिक जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन बिम्ब पूज्य कहलाए, जो शिव मारग दर्शाए।
हम उत्तर दिश की भाई, शुभ पूज रहे अतिशायी॥4॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ उत्तरदिक जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **जिनगृह के आगे रहा, मानस्तंभ विशाल।**
जिन की गाते भाव से, आज यहाँ जयमाल॥

(चौपाई)

जय-जय मानस्तंभ निराला, चउ दिश जो जिनबिम्बों वाला।
जो मानी का मान गलावे, सबको सम्यक् ज्ञान करावे॥2॥
प्रभु से बारह गुणा ऊँचाई, चहुँ दिश सुन्दर दिखती भाई।
योजन बीस प्रकाश कराए, बारह योजन से दिख जाए॥3॥
घंटा मानस्तंभ सु सोहे, चामर परम ध्वजा मन मोहे।
स्वर्णिम जिनमें जिन प्रतिमाएँ, देव नित्य अभिषेक कराएँ॥4॥
चारों ओर सरोवर सुन्दर, निर्मल जल से भरे जु मनहर।
फिर तहँ पुष्पवाटिका शुभकर, मानस्तंभ लगे बहु सुन्दर॥5॥
मानस्तंभ की महिमा न्यारी, सुर नर करें जु शोभा भारी।
मरकत मणिसम सुन्दरतायी, जिसका दर्शन शुभ फलदायी॥6॥
चारों दिश श्री जिन प्रतिमाएँ, हम दर्शन से विघ्न नशाएँ।
मानस्तंभ की करें जो पूजा, फिर नहि पावें भव वो दूजा॥7॥
करे सु वंदन सब नर नारी, तुमने सब संशय है टारी।
मानस्तंभ जगत सुखदाई, आरति कर हम पुण्य सुपाई॥8॥
मानस्तंभ के दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
हम भी 'विशद' ज्ञान प्रगटाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ॥9॥

दोहा- **मानस्तंभ की भावना, धरें जो मन में कोय।**
मन के सब दुख दूर हों, चहुँ दिश शांती होय॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक मानस्तंभ स्थित जिन प्रतिमाभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जिनबिम्बों का दर्श कर, शांती मिले अपार।**
शिव पद पाने के लिए, वन्दन बारम्बार॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत) ॥

कुन्दकुन्दादि आचार्य परमेष्ठी का अर्घ्य

पूर्वाचार्य श्री कुन्दकुन्दादि, आदिसागराचार्यप्रवर।
महावीरकीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर॥
भरत सिन्धु सम्भव सागर जी, कुन्थुसागर विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन विशद मेरा सादर॥

ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष॥

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु, सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायी॥

(शान्तये शान्तिधारा-3) (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)
(कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ (ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पार्श्वनाथाष्टक

श्यामो वर्ण विराजितेति विमले, श्यामोऽपि सर्पो स्मृतः।
श्यामो मेघ निघर्घरोपि च घटा-श्यामं च रात्र्यखिलं॥
वर्षा मूसलधारणं च-मखिलं, कायोत्सर्गेणतां।
धरणेन्द्रो पद्मावती युगसुरं, श्री पार्श्वनाथं नमः॥1॥
नमः श्री पार्श्वनाथाय त्रैलोक्याधिपतेर्गुरुः।
पापं च हरते नित्यं पार्श्वतीर्थस्य दर्शनम्॥2॥
ॐ ऐं क्लीं श्री धरणेन्द्र, पद्मावती सहिताय।
अतुल बल पराक्रमाय, ऐं ह्रीं क्लीं क्म्ल्व्र्यूं नमः॥3॥
दर्शन हरते पापं, दर्शनं हरते दुखं।
दर्शनं हरते रोगान्, व्याधिर्हरति दर्शनम्॥
ॐ आं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः॥4॥
दर्शना-ल्लभ्यते ज्ञानं, दर्शनाल्लभ्यते धनं।
दर्शनाल्लभ्यते पुत्रं, सुखी भवति दर्शनात्॥
ऐं ॐ अः नमः नव बार जाप्यं दीयते॥5॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं, धनार्थी लभते धनं।
विद्यार्थी लभते विद्यां, सुखी भवति निश्चितं॥6॥
राज्य-मान्यं भवेन्नित्यं, प्रजानां च विशेषतः।
दुर्जनाश्च क्षयं यांति, श्रेयो भवति संकटे॥7॥
इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं, त्रि-संध्यं-च विशेषतः।
गृहे भवति कल्याणं, पार्श्वतीर्थ-स्तवेन च॥8॥

श्री नाक नायकं नरेश्वर वृन्द वन्द्यं,
संसार दुःख तरु मूलन हस्तिराजम्।
सद् ज्ञान दर्शित समग्र जगत् स्वभावं।
भक्त्या स्तुवेह-मथ पार्श्व जिनं समोदम्॥

॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

"मंगलाचरण"

हर्षित होके पार्श्वनाथ की, महिमा अतिशय गाते हैं।
अपने हम सौभाग्य जगाने, पूजा पाठ रचाते हैं॥
जिन पार्श्वनाथ की आज यहाँ, हम महिमा गाने आये हैं।
अतिशयकारी यह विधान हम, आज यहाँ कर पाए हैं॥1॥
मण्डल की रचना में पहले, मध्य में लिखना है ॐ कार।
कोठे पाँच बनाके जिसमें, अर्घ्य चढ़ाए मंगलकार॥
प्रथम कोष्ठ में पंचकल्याणक, द्वितिय में दश धर्म महान।
तृतिय में आराधनाएँ चउ, एवं सोलह कारण जान॥2॥
चौथे वलय में बत्तिस देवों, और देवियों से गुणगान।
पंचम कोष्ठ में चौषठ ऋद्धी, प्रतिहार्य भी आठ प्रधान॥
सिद्धों के हैं आठ मूलगुण, का भी जिसमें है व्याख्यान।
जाप और जयमाला पढ़के, महा अर्घ्य भी करें प्रदान॥3॥
इस विधि मण्डल की रचना कर, अर्चा करके श्रेष्ठ विधान।
दुख दरिद्र को दूर हटाकर, प्राणी पाएँ पुण्य निधान॥
भूत प्रेत आदिक की बाधा, नश जाती है अपने आप।
भाव सहित पूजा करने से, जन्म-जन्म के कटते पाप॥4॥
मन की इच्छा पूरी होती, जागे इन जीवों के भाग्य।
अर्चा करने वाले प्राणी, स्वयं जगाते हैं सौभाग्य॥
नाना वर्ण का मण्डप सुन्दर, वेदी का करके निर्माण।
जिनाभिषेक करके जिनवर का, सकली करण का करें विधान॥5॥
मण्डप शुद्धि आदिक विधि कर, पूजा विधि भी पढ़े प्रधान।
पूजा प्रथम करें श्री जिन की, करें बाद में विशद विधान॥
पूर्ण अर्घ दे शांति विसर्जन, करें आरती मंगलकार।
हाथ जोड़कर करें नमोस्तु, प्रभु के चरणों बारम्बार॥6॥

दोहा— पार्श्वनाथ भगवान की, अर्चा कर शुभकार।
सुख शांती सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री पार्श्वनाथ पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

शम्भू छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारित हरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रौं ग्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥8॥

ॐ खां खीं खूं खौं खः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं॥
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं॥9॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूँ उ ह्रौं सा ह्रः श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, गाते हैं जयमाल॥1॥

(छन्द-तामरस)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते॥2॥
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते॥3॥
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते॥4॥
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते॥5॥
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते॥6॥

जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते॥7॥
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नात्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते॥8॥
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते॥9॥

दोहा

भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ॥10॥

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **श्याम रंग में शोभते, ऊँचे प्रभु नौ हाथ।**
फणधर लक्षण से सहित, पूजें पारसनाथ॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

प्रथम वलयो पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
(पहले वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख-शांति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पंचकल्याणक युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(त्रिभंगी छंद)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, वैशाखकृष्ण द्वितियायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, पौषकृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, पौषकृष्ण एकादश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, चैतकृष्णा चतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।

श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, विशद मोक्ष कल्याण।**
प्राप्त किये जिन देव ने, तिनको करूँ प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, पंचकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितिय वलयः

अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(दूसरे वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख-शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दस धर्म युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(चाल छन्द)

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे उत्तम क्षमा के धारी!, जन जन के करुणाकारी।।

श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे मार्दव धर्म के धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
हे उत्तम आर्जव धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, औ आतम ध्यान में लागें।
हे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम शौच धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
हे उत्तम सत्य के धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम सत्य धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षट्काय जीव को पोषें।
हे उत्तम संयम धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम संयम धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
हे उत्तम तप के धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम तप धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रमजावें।
हे त्याग धर्म के धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम त्याग धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किंचित् राग न लावें, वो वीतरागता पावें।
हे आकिञ्चन व्रत धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥9॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आकिञ्चन धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
हे ब्रह्मचर्य व्रत धारी!, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥10॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत् चेतन चित्धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
हे क्षमा आदि वृषधारी, जन-जन के करुणाकारी॥
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे विघ्न विनाशनकारी!, हम पूजा करें तुम्हारी॥11॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, क्षमादि धर्म सहित श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

अथ तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(तीसरे वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख-शांति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

4 आराधना 16 कारण भावना युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(गीता छन्द)

पच्चीस दोष विमुक्त शुभ, अष्टांग सद्दर्शन कह्यो।
जिनदेव आगम मुनिवरों में, हृदय से श्रद्धा गह्यो॥

जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है॥1॥

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाराधनाय सर्व बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री द्वादशांग जिनेन्द्र वाणी, अष्टांगमय निर्दोष है।
सम्यक् विभूषित आत्म ज्योती, ज्ञान गुण की कोष है॥
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है॥2॥

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्ज्ञानाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों महाव्रत समिति गुप्ति, मन वचन औ काय हो।
तेरह विधी चारित्र पालें, हृदय से हर्षाय हो॥
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है॥3॥

ॐ ह्रीं तेरहविध शुद्ध सम्यक्चारित्राराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् विधि तप तपे द्वादश, बाह्य अभ्यंतर सभी।
निज कर्म क्षय के हेतु तपते, चाह न रखते कभी॥
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है॥4॥

ॐ ह्रीं द्वादश विधि शुद्ध सम्यक् तपाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धी भावना शुभ, दोष बिन निर्मल सही।
यह मोक्ष बट का बीज उत्तम, या बिना नहिं शिव मही॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
दर्शन विशुद्धि भावना शुभ, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥5॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय गुण सद्धर्म का शुभ, मूल तुम जानो सही।
बिन विनय किरिया धर्म की, इस लोक में निष्फल कही॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
पाऊँ विनय सम्पन्नता, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित विनय सम्पन्न भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष अष्टादश सहस व्रत, शील का पालन महा।
अतिचार रहित सुव्रतों की शुभ, भावना में रत रहा॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
शीलव्रत अनतिचार है, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥7॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत अवधि सुज्ञान मनः, पर्यय तथा केवल कहा।
सद्ज्ञान के उपयोग में, जिनका सु मन नित रत रहा॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं ज्ञानोपयोग ऽभीक्ष्ण, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म औ सद्धर्म फल में, हर्ष मय संयुक्त हैं।
जो जगत् दुख मय जानकर, विषयों से पूर्ण विरक्त हैं॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं भाव संवेगता, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥9॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित संवेग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पाप गिरि के तोड़ने को, सुतप वज्र समान है।
तप ही भवोदधि पार हेतु, विमल अमन विमान है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं सम्यक् तप हृदय, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥10॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तिस्तप भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग जलाय सद्गुण, त्याग जग सुखदाय है।
भवि त्याग भाव जगाय उर में, यही मोक्ष उपाय है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं त्याग सुभावना, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥11॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तितस्त्याग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या विधि मुनिन को सुख बढ़े, साधु समाधि जानिए।
उपसर्ग परीषह राग भय, बाधा सभी कुछ हानिए॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं साधु समाधि भाव, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥12॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित साधु समाधि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु जन की साधना के, विघ्न सारे टालकर।
साधना में हो सहायक, भाव शुभम् संभालकर॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं वैयावृत्ति भाव, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥13॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय चौंतिस प्रातिहार्य वसु, ऽनन्त चतुष्टय जानिए।
छियालीस गुण संयुक्त निर्मल, भक्ति भाव प्रमानिए॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं सम्यक् तप हृदय, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥14॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अर्हद् भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन सुज्ञान चारित्र तप, अरु वीर्य पंचाचार हैं।
छत्तीस गुण संयुक्त गुरु की, भक्ति जग में सार है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं आचार्य भक्ति भाव, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥15॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आचार्य भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान द्वादश अंग चौदस, पूर्व धारी जिन मुनी।
पढ़ते पढ़ाते मुनिवरों को, उपाध्याय भक्ती गुणी॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं बहुश्रुत भक्ति भाव, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥16॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद युत अनेकांतमय, जिनदेव की वाणी कही।
जो है प्रकाशक चराचर की, विमल जिन वाणी रही॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं प्रवचन भक्ति भाव, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥17॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित प्रवचन भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता सुवन्दन प्रतिक्रमण, व्युत्सर्ग प्रत्याख्यान है।
स्तव सहित षट् कर्म पालन, से ही निज कल्याण है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं आवश्यक अपरिहार, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥18॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आवश्यकापरिहार्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह का तम सघन जग में, कठिन जिसका पार है।
जिन मार्ग का उद्योत करना, मोक्ष मारग सार है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं मार्ग प्रभावना, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥19॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव की वाणी सुनिर्मल, मोक्ष की दातार है।
वात्सल्य प्रवचन शास्त्र में हो, यही सुख आधार है॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं वात्सल्य भावना, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥20॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वात्सल्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, सद्गुणों के कोष हैं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जग में, विघ्नहर निर्दोष हैं॥
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं भाऊँ सोलह भावना, जो शुद्ध सिद्ध स्वरूप है॥21॥

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित चऊ आराधना दर्शन विशुद्धिआदि षोडश भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(चौथे वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख-शांति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

32 इन्द्र एवं 8 कुमारी द्वारा पूजित

(जोगीरासा छन्द)

असुर इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजन करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥1॥

ॐ ह्रीं असुर कुमारेण सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥2॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥3॥

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥5॥

ॐ ह्रीं अग्निइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥6॥

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥8॥

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥9॥

ॐ ह्रीं दीप इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्सुरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥13॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥14॥

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥15॥

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥17॥

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥19॥

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥20॥

ॐ ह्रीं रविइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥22॥

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥23॥

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥28॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥29॥

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥31॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥33॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥34॥

ॐ ह्रीं ह्री देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धृति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥35॥

ॐ ह्रीं धृति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥36॥

ॐ ह्रीं कीर्ति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥37॥

ॐ ह्रीं बुद्धि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥38॥

ॐ ह्रीं लक्ष्मी देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥39॥

ॐ ह्रीं शांति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवें।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥40॥

ॐ ह्रीं पुष्टि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव इन्द्र वसु देवियाँ, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावें॥41॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् इन्द्र एवं अष्ट कुमारिका परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम वलयः

अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(अब पाँचवें वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो! हे पार्श्व प्रभो!, मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख-शांति दर्शाओ॥
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से॥

हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन॥

ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्व बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

64 ऋद्धि 8 प्रातिहार्य 8 गुण युक्त पार्श्वप्रभु के अर्घ्य

तर्ज-रंगमा-रंगमा (परदेशी-परदेशी...)

तीन लोक तिहुँ काल के सुन भाई रे!
सकल द्रव्य को जाने हो जिन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
केवल बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥1॥

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के मन की बात को जाने भाई रे!
मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धिधर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मनः पर्यय ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥2॥

ॐ ह्रीं मन:पर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल परमाणु को भी जाने भाई रे!
अवधि ऋद्धि को धार मुनीश्वर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अवधि बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥3॥

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरी कोष्ठ में वस्तु अनेकों भाई रे!
शब्द अर्थ मय कोष्ठ ऋद्धि धर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
कोष्ठ बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥4॥

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज बोय तो धान अधिक हो भाई रे!
बीज ऋद्धि में सार ग्रंथ को गाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
बीज बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥5॥

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपद बहु शब्दों को सुनकर भाई रे!
सर्व का धारण हो जावे मन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥6॥

ॐ ह्रीं संभिनन-श्रोतृ ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखें एक पद जैन मुनीश्वर भाई रे!
सब ग्रन्थों का सार कहे सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
पादानुसारि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥7॥

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव योजन से दूर की सुन भाई रे!
स्पर्शन की शक्ति ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरस्पर्शन ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥8॥

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे!
रसास्वाद की शक्ति ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरास्वादन ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥9॥

ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे!
गंध ग्रहण की शक्ति ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूर गन्ध ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥10॥

ॐ ह्रीं दूरगन्ध बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ सेंतालिस सहस तिरेसठ भाई रे!
योजन दृष्टि को बल ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरावलोकन ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥11॥

ॐ ह्रीं दूरावलोकन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश योजन दूर की सुन भाई रे!
दूरश्रवण ऋद्धि ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दूरश्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥12॥

ॐ ह्रीं दूरश्रवण बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्वधर सब विद्याएँ पाई रे!
लौकिक इच्छा कुछ न ऋषिवर चाही रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दशम पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥13॥

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब धारण तप से पाई रे!
चरण कमल में मन वच तन सिर नाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
चौदह पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥14॥

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण भाई रे!
अष्टांग निमित्त, बुद्धि ऋद्धीधर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अष्टांग-निमित्त बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥15॥

ॐ ह्रीं अष्टांग-निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवादिक के भेद पढ़े बिन गाई रे!
अंग पूर्व का ज्ञान मुनी समझाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्रज्ञा श्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥16॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रवण बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ तें जीव भिन्न हैं भाई रे!
यातें पर की चाहत मेटो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्रत्येक-बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥17॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी ऋषिवर के सम्मुख आई रे!
स्याद्वाद कर किया पराजित भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
वादित्य ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥18॥

ॐ ह्रीं वादित्य बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल के ऊपर थल वत् चालें भाई रे!
जल जंतु का घात न होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
चल चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥19॥

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू ऊपर चालें भाई रे!
क्षण में बहु योजन तक जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
जंघा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥20॥

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तंतु पर चालें भाई रे!
भार से तंतु भी न टूटे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
तंतु चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥21॥

ॐ ह्रीं तंतुचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प के ऊपर गमन करें सुन भाई रे!
पुष्प जीव को बाधा न हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
पुष्प चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥22॥

ॐ ह्रीं पुष्पचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्रों के ऊपर गमन करें सुन भाई रे!
पत्र जीव को बाधा न हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
पत्र चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥23॥

ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजन पे मुनि गमन करें सुन भाई रे!
बीज जीव को बाधा ना हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
बीजा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥24॥

ॐ ह्रीं बीज चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणी वत् मुनि गमन करे सुन भाई रे!
षट्काय जीव को घात न होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥25॥

ॐ ह्रीं श्रेणीचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पे गमन करें सुन भाई रे!
अग्नि शिखा भी हले नहीं सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अग्नि चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥26॥

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्गादि आसन से मुनि भाई रे!
गमन करें नभ माहिं ऋषीवर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
नभ चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥27॥

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु समान काया हो जावे भाई रे!
कमल तंतु पर निराबाध तिष्ठाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अणिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥28॥

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख योजन तन की ऊँचाई भाई रे!
नरपति का वैभव उपजावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
महिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥29॥

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया विशाल मुनि जन-जन को दिखलाई रे!
अर्क तूल सम हल्का तन हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
लघिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥30॥

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया सूक्ष्म मुनि सब जन को दिखलाई रे!
इन्द्रादिक के द्वारा न हिल पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
गरिमा ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥31॥

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चंद्र ग्रह मेरुगिरि सुन भाई रे!
भू पर रह स्पर्श करें मुनि भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्राप्ति ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥32॥

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि रूप बनाते मुनिवर भाई रे!
पृथ्वी में जल वत् धस जावें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
प्राकाम्य ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥33॥

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता मुनिवर पाई रे!
इन्द्रादिक सब शीष झुकाते भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ईशत्व ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे!॥34॥

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके वल्लभ गुण के दाता भाई रे!
तीन लोक दर्शन करके वश हो जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
वशित्व ऋद्धीधर पूजों हो भाई रे!॥35॥

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत माहिं निकस जावें मुनि भाई रे!
रुकें नहीं काहू से मुनिवर भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अप्रतिघात ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥36॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके देखत प्रच्छन होवें भाई रे!
मुनि को जाते कोई देख न पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अन्तर्धान ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥37॥

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वांछित बहु रूप बनावें भाई रे!
कामरूपिणी विद्या मुनिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
कामरूप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥38॥

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि तप करके अधिक बढ़ाई रे!
उग्र तपोऋद्धि तें ऋषिवर पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
उग्र तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥39॥

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि कर क्षीण भयो तन भाई रे!
दीप्त तपो ऋद्धि में दीप्ति पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दीप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥40॥

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार करत नीहार न होवे भाई रे!
तन में शुष्क हो तप ऋद्धि तें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
तप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥41॥

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस नाड़ी में सबनि जीव के भाई रे!
सबहि भाव की जानन शक्ति पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
महातपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥42॥

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्यथा अनशनादि मुनि पाई रे!
ध्यान व्रतों से डिगें नहीं ऋषि भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घोर तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥43॥

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट सतावें ऋषिवर को सुन भाई रे!
मरी आदि भय आवें जग में भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घोर पराक्रम ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥44॥

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अघोर ब्रह्मचर्य धारी हो ऋषि भाई रे!
सर्व रोग मिट जावे मुनि ठहराई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥45॥

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के सब अक्षर को भाई रे!
मन में अर्थ विचारि मुहूर्त्त में पाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ऋषि मनोबल ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥46॥

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान को पाठ मुहूर्त्त में भाई रे!
कण्ठ में खेद न होवे करके भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
ऋषि वचन बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥47॥

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक ऊँगली तें मुनि हिलाई रे!
गर्व करें नहिं बल को जिन मुनिराई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
कायाबल ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥48॥

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर के चरणों की रज भाई रे!
हरती सारे रोग क्षणिक में भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आमर्षौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥49॥

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि को थूक खखार लगत सुन भाई रे!
मिटते सारे रोग तुरत ही भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
खेल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥50॥

ॐ ह्रीं खेल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर तन की स्वेद युक्त रज भाई रे!
सर्व व्याधि स्पर्श किए नश जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
जल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥51॥

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंत नासिका अंगों का मल भाई रे!
सर्व रोग को क्षण में देय नशाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥52॥

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य मूत्र मल मुनि के तन का भाई रे!
नाना व्याधि को क्षण में देय नशाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
विडौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥53॥

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन से स्पर्शित चले हवाई रे!
आधि व्याधि को क्षण में देय नशाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
सर्वौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥54॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के कर में विष अमृत हो भाई रे!
वचन सुनत मूर्छित निर्विष हो भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आस्य विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥55॥

ॐ ह्रीं आस्य विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्पादिक का जहर व्याप्त तन भाई रे!
मुनि की दृष्टि परत दूर हो जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दृष्टि विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥56॥

ॐ ह्रीं दृष्टि विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर क्रोध से कहते तू मर जाई रे!
सुनकर प्राणी तुरन्त ही मर जाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
आशीर्विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥57॥

ॐ ह्रीं आशीर्विष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध दृष्टि मुनि की पड़ जावे भाई रे!
दृष्टि पड़ते तुरन्त मर जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
दृष्टि विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥58॥

ॐ ह्रीं दृष्टि विष रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
क्षीर युक्त सुस्वादु होवे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
क्षीर स्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥59॥

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
मधु सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
मधुस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥60॥

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे!
घृत सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
घृतस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥61॥

ॐ ह्रीं घृतस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में विष अमृत होवे भाई रे!
वचनामृत संतुष्ट करें सुन भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अमृतस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥62॥

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहार करें जाके घर भाई रे!
चक्रवर्ति की सेना तहं पे जीमें भाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अक्षीण संवास ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥63॥

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ घर में मुनि तिष्ठें भाई रे!
ता घर चक्रवर्ति की सैन्य समाई रे!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे!
अक्षीण महानस ऋद्धीधर पूजों भाई रे!॥64॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(चाल टप्पा)

प्रातिहार्य जुत समवशरण की, शोभा दर्शाई।
तरु अशोक है, शोक निवारक, भविजन सुख दाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥65॥

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभक्ति वश सुरपुर वासी, पुष्प लिए भाई।
पुष्प वृष्टि करते हैं मिलकर, मन में हर्षाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥66॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, शुभ मंगल दाई।
दिव्य ध्वनि सुनते नर सुर पशु, हिरदय हर्षाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई॥
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥67॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय अनुपम धवल मनोहर, सुन्दर सुखदाई।
चौंसठ चँवर ढुरे प्रभु आगे, अति शोभा पाई॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई।।

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।68।।

ॐ ह्रीं धवलोज्ज्वल चौंसठ चँवर सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम वीर अतिवीर जिनेश्वर, जगत् पूज्य भाई।
रत्न जड़ित अतिशोभा मंडित, सिंहासन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।69।।

ॐ ह्रीं रत्नजड़ित सिंहासन सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत् ज्योति श्री जिनवर तन की, अतिशय चमकाई।
प्रभा पुँज युत प्रातिहार्य शुभ, भामण्डल पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।70।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्ष भाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
देव दुन्दुभी प्रातिहार्य शुभ, श्री जिनवर पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।71।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़े कनक नग क्षत्र मणीमय, रत्न माल लपटाई।
तीन लोक के स्वामी हों, ज्यों क्षत्रत्रय पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।72।।

ॐ ह्रीं क्षत्र त्रय सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध के अष्ट गुण

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।73।।

ॐ ह्रीं अनन्त सम्यक्त्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनन्ता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, 'विशद' ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।74।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, उत्तम दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।75।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों ने शक्ति, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने।।76।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म के भेद अनेकों, नाश किये भाई।
चित्-स्वरूप चैतन्य जीव ने, सूक्ष्मत्व सुगुण पाई।।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।

विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥77॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक क्षेत्र अवगाह जीव के, संश्लेष पाई।
निज पर घाती कर्म नशाए, अवगाहन पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥78॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद मेट निरन्तर, निज आतम ध्यायी।
उत्तम अगुरु-लघु गुण योगी, स्वगुण प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥79॥

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन भव भव भंजन, शुद्ध रूप ध्यायी।
अव्याबाध गुण प्रकट किए जिन, पूजों हर्षाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥80॥

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि धार मुनीश्वर, वसु गुण प्रगटाई।
प्रातिहार्य वसु पाये प्रभु ने, भविजन सुख दाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई, जिने॥81॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधर अष्टगुण एवं अष्ट सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनन्दा, श्री जिन चंदा, शिवसुख कंदा, ज्ञान धरा।
हम पूजें ध्यावें, तव गुण गावें, मिट जावे मृतु, जन्म जरा॥
पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जापः-(1) ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते सकल विघ्नहर ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वोपद्रव शांतिं, लक्ष्मी लाभं कुरु कुरु नमः स्वाहा।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीन योग से देव की, पूजा करूँ त्रिकाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, अब गाऊँ जयमाल॥

(हे दीन बंधु श्री पति...)

जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ देव हमारे,
जय विघ्न हरण नाथ! भव दुःख निवारे।
जय-जय प्रसिद्ध देव का गुणगान मैं करूँ,
जय अष्ट कर्म मुक्त का शुभ ध्यान मैं करूँ॥1॥
छः माह पूर्व गर्भ के, नगरी को सजाया
देवों ने सारे लोक में, शुभ हर्ष मनाया।
काशी नरेश अश्वसेन, धर्म के धारी,
रानी थी वामादेवी, शुभ लक्षणा नारी॥2॥
प्राणत विमान से चये, सुगर्भ में आये,
देवेन्द्र ने प्रसन्न हो, बहु रत्न वर्षाये।
एकादशी को पौष कृष्ण, जन्म जिन पाया,
आनन्द रहस देवों ने, आके रचाया॥3॥
सौधर्म इन्द्र ऐरावत स्वर्ग से लाया,
पाण्डुक शिला में जाके अभिषेक कराया।
बालक के दायें पग में अहि चिह्न था प्यारा,
पारस कुमार नाम ले सौधर्म पुकारा॥4॥

माता के हाथ सौंप दिए इन्द्र बाल को,
माता पिता प्रसन्न हुए देख लाल को।
बढ़ने लगे कुमार श्वेत चाँद के जैसे,
उपमा नहीं है कोई गुणगान हो कैसे॥5॥
करते कुमार क्रीड़ा मित्रों के साथ में,
लेते कुमार को सभी अपने सु हाथ में।
अष्टम बरस की उम्र में देशव्रत धारे,
रहने लगे कुमार जग में जग से न्यारे॥6॥
यौवन अवस्था देख पिता ब्याह की ठानी,
बोले कुमार चाहूँ मैं मोक्ष की रानी।
हाथी पे बैठ जंगल की सैर को गये,
देखे वहाँ पे जाके अचरज कई नये॥7॥
पञ्चाग्नि तप में तापसी खुद को तपा रहा,
लकड़ी में कई जीवों को वह जला रहा।
तापस से कहा पार्श्व ने क्यों जीव जलाते,
जलते हुए प्राणी सभी दुख वेदना पाते॥8॥
गुस्से में आके तापसी पारस से यूं बोला,
छोटे से मुख से बड़ी बात क्यों तू बोला।
पारस ने तापसी को विश्वास दिलाया,
लकड़ी को फाड़ते ही युगल नाग दिखाया॥9॥
नवकार मंत्र नाग युगल को सुना दिया,
जीवों ने जाके स्वर्ग लोक जन्म पा लिया।
वैराग्य पूर्ण दृश्य देख भावना भाये,
ब्रह्म ऋषि देव तब संबोधने आये॥10॥
तब देव चउ निकाय के वहाँ पालकी लाये,
शुभ पालकी में बैठ देव वन को सिधाए।
वहाँ पंच मुष्टि केशलोंच महाव्रत धारे,
फिर पय के धन-दत्त गृह लिए आहारे॥11॥

देवों ने तभी पंच विधी रत्न वर्षाये,
अहो दान पात्र बोल, बोल देव हर्षाये।
जंगल में जाके पार्श्व प्रभु योग धर लिया,
पूरब के बैरी कमठ ने तब गौर कर लिया॥12॥
कीन्हा तभी उपसर्ग वहाँ आकर भारी,
घोर अंधकार किया रात ज्यों कारी।
तीक्ष्ण तीव्र वेग वाली तब हवा चलाई,
प्रचण्ड और भयानक तब दाह लगाई॥13॥
मूसल की धार सम वहाँ मेघ बरसाए।
पद्मावती धरणेन्द्र तभी दर्श को आए,
शीष पे बिठाय छत्र फण का बनाए॥14॥
हार मान कमठ देव चरण झुक गया,
कैवल्य ज्ञान जिनवर को तभी हो गया।
भव्यों को उपदेश देके बोध जगाया,
जीवों को आपने शुभ मार्ग दिखाया॥15॥
प्रभु स्वर्ण भद्रकूट तीर्थराज पर गये,
कर्म चउ अघातिया प्रभु वहाँ पे क्षये।
शुभ धीर-धारी धर्म धर पार्श्वनाथजी,
'विशद' भाव सहित झुके चरण माथ जी॥16॥

(घत्ता छन्द)

श्री पार्श्वनाथ जिनेशा, नाग नरेशा, नमित महेशा भक्ति भरा।
मन, वच, तन ध्यावें, हर्ष बढ़ावें, मंगलमय हो पूर्णधरा॥

ॐ ह्रीं सकल विघ्नहराय अनन्त चतुष्टय केवलज्ञान लक्ष्मी संयुक्ताय परम पवित्राय सर्वकर्म रहिताय श्री विघ्नहर पार्श्वनाथाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पार्श्व प्रभु के चरण में, भक्ति सहित झुक जाय।
'विशद' ज्ञान पाके शुभम्, स्वयं पार्श्व बन जाय॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

काकोरी के श्री पार्श्वनाथ जी की पूजा

(रचयिता: आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज)

जय पार्श्वनाथ-जय, पार्श्वनाथ-जय पार्श्वनाथ करुणाकारी।
उपसर्ग विजेता हुए आप, इस जगती पर समताधारी।।
हे पार्श्वधाम के पार्श्वनाथ!, प्रभु तुमको हृदय बुलाते हैं।
हम तीन योग से हे प्रभुवर!, निज हृदय कमल तिष्ठाते हैं।।

दोहा- **आओ पधारो मम हृदय, करते हम आह्वान।**
कृपावन्त हो कीजिए, प्रभू जगत कल्याण।।

ॐ ह्रीं काकोरी जिनालय स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ताटंक छंद)

इन्द्रिय के भोग मनोग रहे, हम भोगों में ही अटक रहे।
जन्मादिक रोगों से पीड़ित हो, तीन लोक में भटक रहे।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन नीर चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं काकोरी जिनालय स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भवाताप से तप्त हुए, न शांति जरा भी पाई है।
हम आकुल व्याकुल रहे सदा, निज की सुधि विसराई है।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन गंध चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

भव सिन्धु अथाह रहा दुखमय, उसमें ही गोते खाए हैं।
न अक्षय पद पाया हमने, जग बार-बार भटकाए हैं।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

रत रहे वासना में हरदम, उनमें ही बस सुख माना है।
पुरुषत्व गंवाया है भव-भव, निज का पुरुषत्व न जाना है।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन पुष्प चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चरु सरस मिष्ठ खाकर भव-भव, हमने निज क्षुधा मिटाई है।
न शांत हुई तृष्णा नागिन, हर चीज बनाकर खाई है।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन चरू चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

संसार महातम नाश हेतु, दीपक कई श्रेष्ठ जलाए हैं।
न मोह तिमिर का नाश हुआ, अतएव दीप हम लाए हैं।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन दीप जलाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलकर कर्मों की ज्वाला में, अपना संसार बढ़ाया है।
हम फँसे मोह के दलदल में, न जिन से छुटकारा मिल पाया है।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन धूप चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

अमृत फल माना भोगों को, हम भोगों में ही लीन रहे।
भोगों का संग्रह करने में, त्रय योगों से तल्लीन रहे।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, फल पावन यहाँ चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

वैभव सारा इस जग का ही, हमको न सुखी बना पाए।
जीवन कई गंवा दिए हमने, फिर अन्त समय में पछताए।।
हे काकोरी के पार्श्व प्रभू!, हम पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
मम इच्छा पूर्ण करो स्वामी, हम चरणों शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई-छन्द)

द्वितीया वदि वैशाख बताई, गर्भ में प्रभु जी आये भाई।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितियायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी एकादशि नामी, गर्भ से आए अन्तर्यामी।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि गाई, प्रभू जी पावन दीक्षा पाई।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की चौथ कहाए, प्रभू जी केवल ज्ञान जगाए।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण चतुर्थ्यां केवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सातें भाई, प्रभु ने पावन मुक्ती पाई।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-**माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
पार्श्व धाम के पार्श्व की, गाते हैं जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

भारत देश उत्तर प्रदेश के, लखनऊ में श्री पारस धाम।
पार्श्वनाथ जिन हैं अतिशायी, जिनके चरणों विशद प्रणाम॥

प्राणत स्वर्ग से चयकर वामा, माँ के गर्भ में प्रभु आए।
माँ ने सोलह सपने देखे, पिता स्वप्न फल बतलाए॥1॥
दोज वदी वैशाख बनारस, अश्वसेन गृह प्रगटाए।
पौष वदी ग्यारस को जन्मे, घर-घर में मंगल छाए॥
ऐरावत ले इन्द्र स्वर्ग से, न्हवन कराने को आए।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराकर, जय-जय जय मंगल गाए॥2॥
गये सैर करने को स्वामी, एक बार जंगल की ओर।
पार्श्व कुंवर ने देखा तपसी, पंचाग्नी तप तपता घोर॥
नाग युगल अग्नी में जलते, देख प्रभू जी हुए उदास।
मंत्र सुनाए णमोकार तब, देव सुगति में पाए वास॥3॥
पौष वदी ग्यारस को पावन, दीक्षा धारे पार्श्व कुमार।
केश लुंचकर हुए दिगम्बर, बने पार्श्व प्रभू जी अनगार॥
किया घोर उपसर्ग कमठ ने, हुए प्रभू तब ध्यानालीन।
हार मान कर चरणों में वह, झुका चरण में होके दीन॥4॥
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रकट किए तब केवलज्ञान।
चैत कृष्ण की चौथ को पावन, समवशरण तब रचा महान॥
गिरि सम्मेद शिखर पे जाके, योग निरोध किए भगवान।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु, पद पाए पावन निर्वाण॥5॥
भक्ति भाव के साथ भक्त जो, प्रभु का न्हवन कराते हैं।
पूजा पाठ आरती करके, चालीसा भी गाते हैं॥
जो विधान करते भक्ती से, वे सौभाग्य जगाते हैं।
हो मुराद मन की पूरी वे, इच्छित फल को पाते हैं॥6॥

दोहा-**गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-शुभ, पाएँ मोक्ष कल्याण।**
स्वर्णभद्र शुभ कूट से, शिवपुर किया प्रयाण॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-**पार्श्वधाम में पार्श्व का, किया 'विशद' गुणगान।**
श्याम रंग में शोभते, अतिशय आभावान॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
इस असार संसार से, पाएँ अब विश्राम
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करें प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धरी, तीन लोक में मंगलकारी॥1॥

काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए॥2॥

जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्वहन कराया॥3॥

वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला॥4॥

तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे॥5॥

तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया॥6॥

नाग युगल मृत्यू को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधया, संवर नाम देव ने पाया॥7॥

प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशी पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए॥8॥

इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले॥9॥

फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती तब आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥10॥

पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षेत्र लगाया भाई॥11॥

चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया॥12॥

सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए॥13॥

गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए॥14॥

योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई॥15॥

श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते॥16॥

भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते।
उभय लोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते॥17॥

हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ॥
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी॥18॥

बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्र बतलाया॥19॥

सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई॥
'विशद' तीर्थ जो हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥20॥

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्री अर्हं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती (काकोरी)

(रचयिता : आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज)

(तर्ज-जय गणेश-जय गणेश-2 देवा....)

जय पारस-जय पारस, जय पारस देवा!।
काकोरी के पार्श्व प्रभु हम, करें आपकी सेवा॥
जय पारस-जय पारस, जय पारस देवा!॥टेक॥

माता वामा देवी पिता, अश्वसेन देवा!॥
अच्युत स्वर्ग से चयकर आए, काशी में जिन देवा॥ जय पारस...॥1॥

पौष कृष्ण ग्यारस को जन्मे, देवों के भी देवा।
न्हवन किए सौ इन्द्र प्रभु का, किऐ चरण की सेवा॥ जय पारस...॥2॥

हरित वर्ण शुभ तन की आभा, देव करें पद सेवा।
सौ वर्षों की आयू पाए, लक्षण नाग सु देवा॥जय पारस...॥3॥

ऊँचा तन सौ हाथ का पाए, प्रभू कर्मों के खेवा।
तीस वर्ष में संयम धारे, मुनि पद पाए देवा॥जय पारस...॥4॥

कर्म घातियाँ नाश किए प्रभु, बने कर्म के छेवा।
गणधर रहे स्वयंभू आदिक, दश करते पद सेवा॥जय पारस...॥5॥

स्वर्ण कूँट सम्मेद शिखर पे, आए स्वयंभू देवा।
योग निरोध प्रभु एक माह का, किये 'विशद' जिन देवा॥जय पारस...॥6॥

श्रावण सुदि सातैं को प्रभु जी, हुए कर्म के छेवा।
खड्गासन से सिद्ध हुए जिन, प्रभु देवों के देवा॥जय पारस...॥7॥

दूर-दूर से भक्त यहाँ आ, करें चरण पद सेवा।
आरती कर वांछित फल पाएँ, मिले मोक्ष का मेवा॥जय पारस...॥8॥

श्री पार्श्वनाथ जी की आरती (काकोरी)

(रचयिता : आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज)

(तर्ज-आज करें हम....)

आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ की, प्रतिमा अतिशयकारी॥
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती-2॥टेक॥

काशी नगरी जन्म लिए प्रभु, मात-पिता हर्षाए-2।
नाग युगल की मृत्यु लखके-2, प्रभु जी दीक्षा पाए॥ हो बाबा...॥1॥

अहिच्छत्र में प्रभु जी तुमने, घाती कर्म नशाए-2॥
केवलज्ञान जगाया तुमने-2, तीन लोक हर्षाए॥हो बाबा, हम...॥2॥

इन्द्रराज की आज्ञा पाकर, धन कुबेर यहाँ आया-2।
स्वर्ण और रत्नों से सज्जित-2, समवशरण बनवाया॥हो बाबा, हम...॥3॥

स्वर्ग से आकर इन्द्रों ने शुभ, प्रातिहार्य प्रगटाए-2।
प्रभु की भक्ती अर्चा करके-2, सादर शीश झुकाए॥हो बाबा, हम...॥4॥

जिन बिम्बों से सज्जित अनुपम, अष्ट भूमियाँ जानों-2।
श्रेष्ठ सभाएँ सुर-नर-मुनि की-2, विस्मयकारी मानों॥हो बाबा, हम...॥5॥

ॐकारमय दिव्य देशना, प्रभुवर श्रेष्ठ सुनाए-2।
स्वर्णभद्र शुभ कूट शिखर जी, से प्रभु मुक्ति पाए॥हो बाबा, हम...॥6॥

उत्तर प्रदेश लखनऊ में अनुपम, पारस धाम कहाए-2।
पार्श्व प्रभु की आरति करने, काकोरी हम आए॥हो बाबा, हम...॥7॥

जब तक 'विशद' मोक्ष न पाएँ, प्रभू आपको ध्याएँ।
तीन योग से नाथ! आपके, हर्ष-हर्ष गुण गाएँ॥ हो बाबा, हम...॥8॥

तीर्थ वन्दना

(तर्ज–तीरथ करने चली सखी...)

तीरथ करने चलें सभी मिल, अपना पुण्य बढ़ाने को।
अष्ट कर्म जो लगे अनादी, उनसे मुक्ती पाने को।।टेक।।
तीर्थंकर जो गर्भ जन्म तप, ज्ञान मोक्ष पद पाए हैं।
या देवों ने भक्ति भाव से, चमत्कार दिखलाए हैं।।
तीर्थ बने हैं वे स्थल ही, पूजा पाठ रचाने को।। अष्टकर्म...।।1।।
कल्याणक भू तीर्थंकर की, तीर्थ क्षेत्र कहलाती है।
हुईं प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, वे सब पूजी जाती हैं।
भव्य भक्त जिन पूजा करते, श्री जिन के गुण पाने को।।अष्टकर्म...।।2।।
शाश्वत जन्म भूमि है पावन, नगर अयोध्या कहलाए।
हुण्डावसर्पिणी काल दोष से, इसमें कुछ अन्तर आए।
ऋषभाजित अभिनन्दन सुमति, जिनानन्तगुण गाने को।।अष्टकर्म...।।3।।
श्रावस्ती सम्भव जिन स्वामी, पद्मप्रभ कौशाम्बी जान।
चन्द्रप्रभु चन्द्रावती वन्दू, पुष्पदन्त काकन्दी मान।।
पार्श्व सुपार्श्व बनारस नगरी, जाएँ दर्शन पाने को।।अष्टकर्म...।।4।।
भद्दिलपुर में श्री शीतल जिन, श्रेयनाथ जी सिंहपुरी।
वासुपूज्य चम्पापुर ध्याएँ, विमलनाथ कम्पिल नगरी।।
रत्नपुरी में धर्मनाथ जी, के जाएँ गुण गाने को।।अष्टकर्म...।।5।।
शांति कुन्थु अर हस्तिनागपुर, मल्लिनाथ नमिनाथ जिनेश।
मिथलापुर में जन्म लिए हैं, राजग्रही सुव्रत तीर्थेश।।
कुण्डलपुर जी चलें वीर प्रभु, के अनुपम गुण गाने को।।अष्टकर्म...।।6।।
अष्टापद चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर गिरनार।
पंच तीर्थ निर्वाण क्षेत्र ये, पूज्य 'विशद' हैं अपरम्पार।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष भू, पूजें मुक्ती पाने को।।अष्टकर्म...।।7।।
लखनऊ के है विकट काकोरी, पार्श्वधाम जो कहलाए।
मुनिसुव्रत श्री नेमिनाथ के, दर्शन भी दर्शक पाए।।
मानस्तम्भ है चौबीसीमय, सद् श्रद्धान जगाने को।।अष्टकर्म...।।8।।